।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०७९ राक्षस नाम संवत्सरे ई. स. 2022-2023

श्री वल्लभाब्द ५४४ - ५४५ शालिवाहन शके १९४४ शुभकृत नाम संवत्सरे

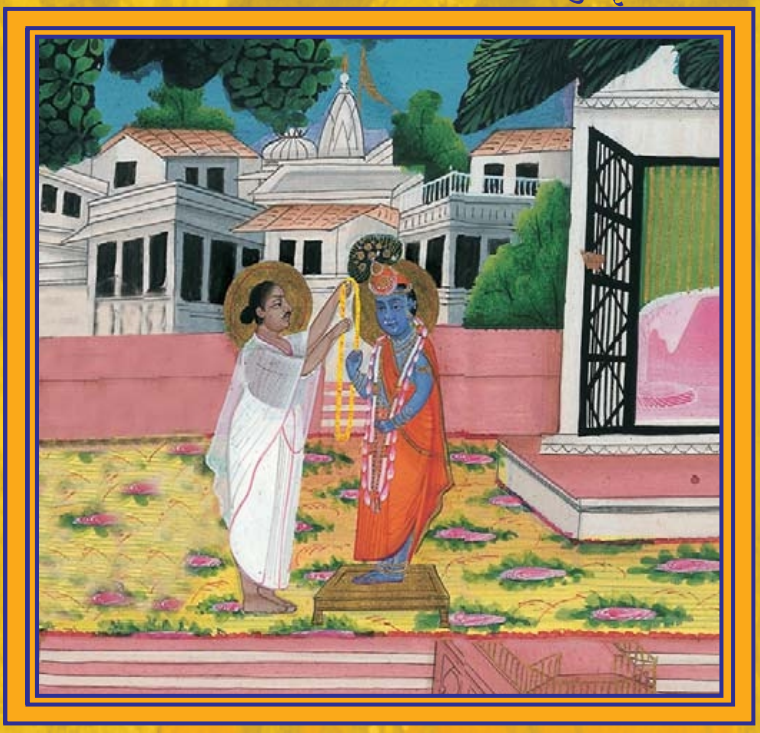

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

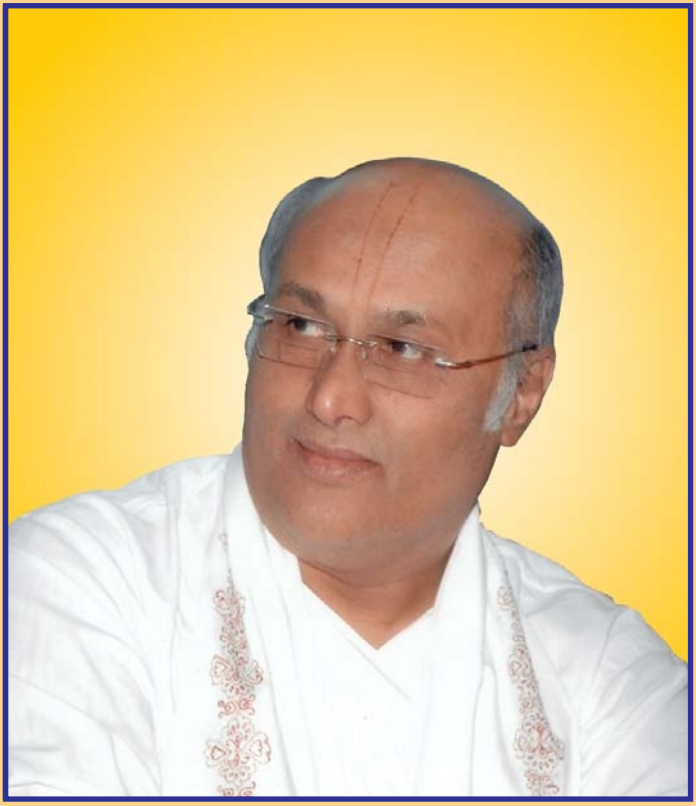

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन - १९५०

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।
श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।
निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्रत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति 1,00,000 *{न्योछावर १०/- रुपया}*

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामीतिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभुजी के उपदेश पृष्ठ ३२ से लेकर ३४ पर प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	2	अप्रेल, सन् 2022 संवत्सरोत्सवः।
२	रवि	3	
३	सोम	4	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	मंगल	5	पंचरंगी लहरियाँ (हरि गणगौर)
५	बुध	6	गुलाबी गणगौर
६	गुरु	7	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	शुक्र	8	
८	शनि	9	
९	रवि	10	रामनवमी व्रतम्।
१०	सोम	11	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	मंगल	12	श्रीवल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	बुध	13	कामदा एकादशी व्रतम्।
१३	गुरु	14	मेष संक्रान्तिः। सतुआ गोपीवल्लभ या राजभोग में पुण्यकाल आज प्रातः सूर्योदय सूं लेके मध्याह्न पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके यह संक्रान्ति १३ गुरु कूं प्रातः ८ बजके ४२ मिनिट पर बैठी है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो। श्रीकूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने।
१४	शुक्र	15	
१५	शनि	16	

वल्लभाब्द ५४४	**वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७६	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	17	इष्टिः।
२	सोम	18	
३	मंगल	19	
४	बुध	20	
५	गुरु	21	
६	शुक्र	22	
७	शनि	23	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सव।
८	रवि	24	
१०	सोम	25	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	मंगल	26	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्यजी (श्रीमहाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४५ को प्रारम्भ।
१२	बुध	27	
१३	गुरु	28	
१४	शुक्र	29	
३०	शनि	30	

वल्लभाब्द ५४५	**वैशाख शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७६	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	1	मई, इष्टिः।
२	सोम	2	
३	मंगल	3	अक्षय तृतीया चन्दनयात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भदानम्।
३	बुध	4	
४	गुरु	5	
५	शुक्र	6	
६	शनि	7	
७	रवि	8	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६६०)
८	सोम	9	
६	मंगल	10	
१०	बुध	11	
११	गुरु	12	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१२	शुक्र	१३	
१३	शनि	14	
१४	रवि	15	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्।
१५	सोम	16	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४५ **ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७६

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	17	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत। दूज को क्षय हायवे सूं आज।
३	बुध	18	कली के शृंगार को आरम्भ।
४	गुरु	19	
५	शुक्र	20	
६	शनि	21	
७	रवि	22	जून
८	सोम	23	
९	मंगल	24	
१०	बुध	25	आज दोपहर २ बजके ५३ मिनिट सूं लेके ज्येष्ठ शुक्ल ८ बुध को दोपहर १२ बजके ३९ मिनिट तक सूर्य को रोहिणी नक्षत्र है। तांसू इन दिनन मे श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
११	गुरु	26	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	27	
१३	शनि	28	
१४	रवि	29	
३०	सोम	30	सोमवती अमावस सूर्योदय से लेके सायं ५ बजे तक।

वल्लभाब्द ५४५ **ज्येष्ठ शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७६

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	31	इष्टिः।
२	बुध	1	जून
३	गुरु	2	
४	शुक्र	3	
५	शनि	4	श्री के नाव को मनोरथ।
६	रवि	5	
६	सोम	6	
७	मंगल	7	
८	बुध	8	
९	गुरु	9	
१०	शुक्र	10	श्री गंगादशमी, गंगादशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	शनि	11	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१३	रवि	12	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१९००)।
१४	सोम	13	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१५	मंगल	14	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा)।

वल्लभाब्द ५४५	**आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	15	इष्टिः।
२	गुरु	16	
३	शुक्र	17	
५	शनि	18	
६	रवि	19	
७	सोम	20	
८	मंगल	21	
९	बुध	22	
१०	गुरु	23	
११	शुक्र	24	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	25	
१३	रवि	26	
१४	सोम	27	
१४	मंगल	28	
३०	बुध	29	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५), इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४५	**आषाढ़ शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	30	
२	शुक्र	1	जुलाई, रथयात्रा।
३	शनि	2	
४	रवि	3	
५	सोम	4	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	मंगल	5	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)
७	बुध	6	
८	गुरु	7	
९	शुक्र	8	
१०	शनि	9	बैंगन दशमी।
११	रवि	10	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण, पूज्यपाद ति. महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया जा सकेगा।
१२	सोम	11	
१३	मंगल	12	
१५	बुध	13	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

वल्लभाब्द ५४५	**श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	14	इष्टिः। हिन्दोलारम्भः
२	शुक्र	15	
३	शनि	16	
४	रवि	17	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५	सोम	18	
६	मंगल	19	
७	बुध	20	
८	गुरु	21	जन्माष्टमी की बधाई।
९	शुक्र	22	
१०	शनि	23	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव। (हाण्डी) उत्सव (१७६३)।
११	रवि	24	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	25	
१३	मंगल	26	
१४	बुध	27	
३०	गुरु	28	हरियाली अमावस।

वल्लभाब्द ५४५	**श्रावण शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	29	इष्टिः।
२	शनि	30	
३	रवि	31	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	सोम	1	अगस्त
५	मंगल	2	नाग पंचमी।
६	बुध	3	
७	गुरु	4	
८	शुक्र	5	
९	शनि	6	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	रवि	7	
११	सोम	8	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं प्रातः शृंगार में १० बजके ३० मिनिट पूर्व याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	मंगल	9	गुरुन को पवित्रा धरावने।
१३	बुध	10	
१४	गुरु	11	श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७), आपस्तम्भ हिरण्य केशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, ऋग्वेदीन, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।
१५	शुक्र	12	रक्षाबन्धनं प्रातः शृंगार में ७ बजके ०६ मिनिट पूर्व, गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२), गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज को उत्सव (१९१७) प्रतिपदा को क्षय होयवे सूं आज। इष्टिः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	शनि	13	हेम हिन्दोला।
३	रवि	14	हिन्दोला विजय शृंगार में, कज्जली तीज।
४	सोम	15	
५	मंगल	16	
६	बुध	17	
७	गुरु	18	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	शुक्र	19	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	शनि	20	नन्दमहोत्सव।
१०	रवि	21	
११	सोम	22	
१२	मंगल	23	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	24	
१३	गुरु	25	
१४	शुक्र	26	काकावल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	शनि	27	कुशग्रहणी अमावस।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	रवि	28	इष्टिः। राधाष्टमी की बधाई।
२	सोम	29	
३	मंगल	30	सामवेदीन की श्रावणी।
४	बुध	31	गणेश चतुर्थी।
५	गुरु	1	सितम्बर, ऋषिपंचमी, द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६	शुक्र	2	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	शनि	3	
८	रवि	4	राधाष्टमी।
९	सोम	5	
११	मंगल	6	नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४)।
१२	बुध	7	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी), वामन द्वादशी।
१३	गुरु	8	
१४	शुक्र	9	
१५	शनि	10	सांझी को आरम्भः। श्राद्धपक्ष को आरम्भ ताको निर्णय पृ. २६ एवं श्राद्धपक्ष को संकल्प पृ. २७ पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५४५	**आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	11	इष्टिः।
२	सोम	12	
३	मंगल	13	
४	बुध	14	
५	गुरु	15	श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	शुक्र	16	
७	शनि	17	
८	रवि	18	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)।
९	सोम	19	
१०	मंगल	20	
११	बुध	21	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	गुरु	22	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)।
१३	शुक्र	23	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)।
१४	शनि	24	
३०	रवि	25	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द ५४५	**आश्विन शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	26	इष्टिः। नवरात्रारम्भः, मातामह श्राद्ध।
२	मंगल	27	
३	बुध	28	
४	गुरु	29	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१९५४)।
५	शुक्र	30	
६	शनि	1	अक्टूबर
७	रवि	2	सरस्वती पूजनारम्भः।
८	सोम	3	
९	मंगल	4	
१०	बुध	5	दशहरा (विजयदशमी), सरस्वती विसर्जनम्, श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	गुरु	6	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	7	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः। त्रयोदशी को क्षय होयवे सूं आज।
१४	शनि	8	
१५	रवि	9	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)। कार्तिक स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४५ **कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७९

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	10	इष्टिः।
२	मंगल	11	
३	बुध	12	
४	गुरु	13	
५	शुक्र	14	
६	शनि	15	
६	रवि	16	
७	सोम	17	
८	मंगल	18	
९	बुध	19	
१०	गुरु	20	
११	शुक्र	21	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	22	
१३	रवि	23	धनतेरस।
१४	सोम	24	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव), हटड़ी।
३०	मंगल	25	ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्यग्रहण ताको निर्णय पृ. २८ व २९ पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५४५ **कार्तिक शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७९

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	26	इष्टिः। गुर्जराणां २०७९ वर्षारम्भः।
२	गुरु	27	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	शुक्र	28	
४	शनि	29	
६	रवि	30	
७	सोम	31	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३)।
८	मंगल	1	नवम्बर, गोपाष्टमी, कान जगाई।
९	बुध	2	अक्षयनवमी। कृतयुगादि। कूष्माण्डदानम्। अन्नकूटोत्सव, गोवर्द्धन पूजा, अमावस्या कूं सूर्यग्रहण हतो तासूं आज।
१०	गुरु	3	
११	शुक्र	4	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में ६ बजके ९ मिनिट पश्चात्।
१२	शनि	5	श्री गुसांईजी के प्रथमलालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)। गोपाष्टमी का क्रम श्रीनाथजी गौशाला नाथद्वारा।
१३	रवि	6	
१४	सोम	7	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	मंगल	8	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः। ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण, ताको निर्णय पृष्ठ ३० व ३१ पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५४५	**मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	9	इष्टिः। व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः।
२	गुरु	10	
३	शुक्र	11	
४	शनि	12	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी (महाराज) कृत।
५	रवि	13	
६	सोम	14	
७	मंगल	15	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१९८४)
८	बुध	16	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५९९)।
८	गुरु	17	
९	शुक्र	18	
१०	शनि	19	घटा को आरम्भ (हरिघटा)।
११	रवि	20	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	21	श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)।
१३	मंगल	22	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
३०	बुध	23	श्यामघटा।

वल्लभाब्द ५४५	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	24	इष्टिः।
२	शुक्र	25	दूज को चन्दा।
३	शनि	26	
४	रवि	27	
५	सोम	28	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सव।
६	मंगल	29	
७	बुध	30	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	गुरु	1	दिसम्बर, सातस्वरूप को उत्सव। श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत। श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई, नवमी का क्षय होयवे सूं आज।
१०	शुक्र	2	लालघटा
११	शनि	3	
१२	रवि	4	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१३	सोम	5	
१४	मंगल	6	
१४	बुध	7	
१५	गुरु	8	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। इष्टिः

वल्लभाब्द ५४५	**पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	9	नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	शनि	10	
३	रवि	11	
४	सोम	12	
५	मंगल	13	
६	बुध	14	
७	गुरु	15	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	शुक्र	16	धनुर्मासारम्भः
९	शनि	17	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।
१०	रवि	18	
११	सोम	19	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)।
१२	मंगल	20	
१३	बुध	21	
१४	गुरु	22	
३०	शुक्र	23	गोस्वामी तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो. १०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन (२०३७)।

वल्लभाब्द ५४५	**पौष शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	24	इष्टिः ।
२	रवि	25	
४	सोम	26	
५	मंगल	27	
६	बुध	28	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१९५३)।
७	गुरु	29	
८	शुक्र	30	
९	शनि	31	
१०	रवि	1	जनवरी सन् २०२३ का प्रारम्भः।
११	सोम	2	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	3	
१३	बुध	4	
१४	गुरु	5	
१५	शुक्र	6	माघ स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४५	**माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	7	इष्टिः।
२	रवि	8	
२	सोम	9	
३	मंगल	10	
४	बुध	11	
५	गुरु	12	
६	शुक्र	13	
७	शनि	14	भोगी धनुर्मास की समाप्ति।
८	रवि	15	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११)। मकर संक्रान्तिः। तिलवा गोपीवल्लभ अथवा राजभोग में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति ७ शनि कूं रात्रि के ८ बजके ४६ मिनिट पर बैठे है तासूं पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके दिनके ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के २ घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
९	सोम	16	
१०	मंगल	17	पीलीघटा
११	बुध	18	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	गुरु	19	
१३	शुक्र	20	
३०	शनि	21	

वल्लभाब्द ५४५	**माघ शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	22	इष्टिः।
२	सोम	23	
३	मंगल	24	
४	बुध	25	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सवः।
५	गुरु	26	बसन्त पंचमी।
६	शुक्र	27	
७	शनि	28	
८	रवि	29	
९	सोम	30	
१०	मंगल	31	
११	बुध	1	फरवरी, जया एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	2	
१३	शुक्र	3	
१४	शनि	4	
१५	रवि	5	माघ स्नान की समाप्तिः। होरी डांडो दण्डारोपणं, आज सूर्यास्तान्तरम् सायं ६ बजके २१ मिनिट पश्चात्, याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द ५४५	**फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०७६	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	6	इष्टिः।
२	मंगल	7	
३	बुध	8	
४	गुरु	9	
४	शुक्र	10	
५	शनि	11	
६	रवि	12	
७	सोम	13	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	मंगल	14	
६	बुध	15	
११	गुरु	16	
१२	शुक्र	17	विजया एकादशी व्रतम्।
१३	शनि	18	
१४	रवि	19	
३०	सोम	20	इष्टिः। सोमवती अमावस योग दोपहर १२ बजके ३७ मिनिट तक।

वल्लभाब्द ५४५	**फाल्गुन शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०७६	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	21	
३	बुध	22	
४	गुरु	23	
५	शुक्र	24	
६	शनि	25	
७	रवि	26	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)
८	सोम	27	होलिकाष्टकारम्भः।
६	मंगल	28	
१०	बुध	1	मार्च
११	गुरु	2	
११	शुक्र	3	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	4	
१३	रवि	5	
१४	सोम	6	होली, होलिका प्रदीपनं १५ मंगल के सूर्योदयात् ६ बजके ५४ मिनिट सू पूर्व।
१५	मंगल	7	धूलिवन्दन (धुरेण्डी)।

वल्लभाब्द ५४५	चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	8	इष्टिः। दोलोत्सव (डोल)।
२	गुरु	9	द्वितीया पाट।
३	शुक्र	10	
४	शनि	11	
५	रवि	12	
६	सोम	13	
७	मंगल	14	गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज के पौत्र गो.चि.१०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा साहब) के पुत्र **गो.चि. श्री लाल गोविन्दजी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)
८	बुध	15	
९	गुरु	16	
१०	शुक्र	17	
११	शनि	18	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	19	
१४	सोम	20	
३०	मंगल	21	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५, शनिवार से आश्विन शुक्ल पक्ष १, सोमवार तक (दिनांक 10.09.2022 से 26.09.2022 तक)

तिथि	**वार**	**दि.**	**श्राद्ध**
भा.शु.१५	शनि	10.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
आ.कृ.१	रवि	11.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
आ.कृ.२	सोम	12.09	तृतीया (तीज) को श्राद्ध
आ.कृ.३	मंगल	13.09	चतुर्थी (चौथ) को श्राद्ध
आ.कृ.४	बुध	14.09	पंचमी (पाचम) को श्राद्ध एवं पिण्डरहित भरणी श्राद्ध
आ.कृ.५	गुरु	15.09	षष्ठी (छठ) को श्राद्ध
आ.कृ.६	शुक्र	16.09	सप्तमी (सातम) को श्राद्ध
आ.कृ.७	शनि	17.09	---
आ.कृ.८	रवि	18.09	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध व व्यतीपात श्राद्ध
आ.कृ.९	सोम	19.09	नवमी (नवम) को श्राद्ध व अविधवा नवमी
आ.कृ.१०	मंगल	20.09	दशमी (दशम) को श्राद्ध
आ.कृ.११	बुध	21.09	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
आ.कृ.१२	गुरु	22.09	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध, सन्यासीन को श्राद्ध
आ.कृ.१३	शुक्र	23.09	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध व मघा श्राद्ध
आ.कृ.१४	शनि	24.09	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
आ.कृ.३०	रवि	25.09	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
आ.शु.१	सोम	26.09	मातामह श्राद्ध

क्रमशः पृ.२७

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. अष्टमी रवि कूं व्यतीपात योग होय वे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णुः 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे राक्षसनाम्नि एकोन अशीतिः अधिक द्विसहस्त्रसंख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण शुभकृत नाम संवत्सरे शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, सिंह राशि स्थिते श्रीसूर्ये ७ शनि तः कन्या राशि स्थिते श्री सूर्ये मीन राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्यः करिष्ये।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्यग्रहण

संवत् २०७९ कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार दिनांक २५.१०.२०२२ ई. कू सूर्यग्रहण होयगो। या दिन नाथद्वारा में स्पष्ट मान सूं दिनमान २८ घटी २२ पल सूर्योदय स्टेण्डर्ड ६ बजके ३८ मिनिट सूर्यास्त स्टेण्डर्ड ५ बजके ५९ मिनिट है। श्रीनाथद्वारा में अमावस्या मंगलवार कूं नवीन गणित प्रमाणे स्पर्श सायं ४ बजके ३५ मिनिट मध्य ५ बजके ३५ मिनिट मोक्ष ६ बजके २९ मिनिट है। पर्वकाल १ घंटा ५४ मिनिट सोमवार की रात्रि के ३ बजके २९ मिनिट सूं ही वेध लगे है तासूं सोमवार रात्रि के ३ बजके २९ मिनिट के पूर्व ही खायो जायगो, मंगलवार के दिन के १२ बजके १८ मिनिट के पूर्व ही जल पियो जायगो। बिना जनेऊ के बालक तथा छोटी कन्या दिन के १२ बजके १८ मिनिट के पूर्व प्रसाद ले सकेंगे। राजभोग की सखड़ी भी गायन कूं जाय या दिन दोपहर २ बजके १५ मिनिट के सुमारे श्री कूं उत्थापन निमित्तक शंखनाद कर जगावने ताकि ग्रहण लगवे सू पूर्व ही संध्या-आरती पर्यन्त की सेवा हो जाय। सुफेदी सब कोरी राखनी, रसोई बाल भोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि ग्रहण में जैसी होती होय वैसी करनी। सर्वत्र दर्भ धरने रीति प्रमाणे सूखो मेवा प्रभृति धरने बीड़ा हूं तबकड़ी में नवीन धरने शय्या को साज बड़ो करनो। शय्या मंदिर के झारी बन्टा प्रभृति खासा करि के सूखे करने, शय्या उठावनी जहां प्रथम दर्भ न धरे होय तहां सर्वत्र दर्भ धरने मथनी निकारि मन्दिर को जलधड़ा वासन शुद्ध और सूखे करने स्पर्श सूं चारेक मिनिट पूर्व दुधधर को भोग उठाय झारी बंटाहूं पट्ट वस्त्र सूं उठावने स्पर्श समय दर्शन खोलिके जपादि करने सायं ५ बजके ३५ पे श्री के आगे दान को संकल्प करनो खिचड़ी को डबरा धृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय हे प्रत्यक्ष

अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जैसो होतो होय वहां वैसो कियो जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करे। मोक्ष समय पीछे चार पांच मिनिट ठहरके स्नानादि करने। शुद्ध होय नवीन जल सूं पात्र तथा स्थल खासा करि नवीन जल सूं झारी भरनी श्री कूं स्नान करवाय के ग्रहण पीछे को भोग तथा शयन भोग में अनसखड़ी ही धरनी। नित्य प्रमाणे सब सेवा करनी। दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा बुधवार कूं नवीन जल सूं सर्व शुद्धि होय के रीति प्रमाणे नित्य क्रम सूं राजभोग पर्यन्त की सेवा कर अनोसर पीछे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनपूर्वक प्रसाद लेनो।

यह ग्रहण : वृषभ, सिंह, धनु, मकर वारेन कूं शुभ
मेष, मिथुन, कन्या, कुम्भ वारेन कूं मध्यम
कर्क, तुला, वृश्चिक, मीन वारेन कूं अशुभ

जाको जन्म नक्षत्र स्वाति होय ताकूं विशेष अनिष्ट जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय तिनकूं विशेष दानादिक करने। एक कांस्य के पात्र तातो पतरो धृत धरिके सुवर्ण को नाग तथा सूर्य बिम्ब धरिके वा ताते पतरे धृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो ताको मंत्र –

तमोमय महाभीमः सोम सूर्य विमर्दनः
हेमतार प्रदानेन मम शान्ति प्रदोभव।।१।।
विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत
दाने नानेन नागस्य रक्षमां वेध जाद्भयात्।।२।।

	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
स्टे. घंटा	४	५	६	१
मिनिट	३५	३५	२६	५४

ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण

संवत् २०७६ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार दिनांक ०८.११.२०२२ ई. कू ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण होयगो। या दिन नाथद्वारा में स्पष्ट मान सूं दिनमान २७ घटी ३४ पल सूर्योदय स्टेण्डर्ड ६ बजके ४८ मिनिट सूर्यास्त स्टेण्डर्ड ५ बजके ५० मिनिट है। श्रीनाथद्वारा में पूर्णिमा मंगलवार कूं नवीन गणित प्रमाणे स्पर्श दिन के २ बजके ३६ मिनिट मध्य ४ बजके ३० मिनिट मोक्ष ६ बजके २० मिनिट है। पर्वकाल ३ घंटा ४१ मिनिट को होयगो। सोमवार की रात्रि के १२ बजके २० मिनिट सूं ही वेध लगे है तासूं १२ बजके २० मिनिट पूर्व ही खायो जायगो। मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजके ३४ मिनिट सूं पूर्व ही जल पियो जायगो। बिना जनेऊ के बालक तथा छोटी कन्या, वृद्ध, अशक्त दिन के ६ बजके ३४ मिनिट के पूर्व प्रसाद ले सकेंगे। मंगलवार के दिन सवेरे वेग ही राजभोग हो जाय। राजभोग की सखड़ी भी गायन कूं जाय उत्थापन के शंखनाद ऐसे समय पर की २ बजके १५ मिनिट तक संध्या आरती पर्यन्त की सेवा हो जाय। सेवा में सुफेदी सब कोरी राखनी। रसोई बाल भोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि करनी। सर्वत्र दर्भ धरने स्पर्श सूं चारेक मिनिट पूर्व झारी बीड़ा पट्ट वस्त्र सूं उठावने दर्शन खोलिके जपादिक करने सायं ४ बजके ३० मिनिट पीछे श्री के आगे दान को संकल्प करनो। खिचड़ी को डबरा धृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय हे। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जैसे जहां होतो होय तहां तेसो कियो जाय। मनुष्य भी यथाशक्ति दानादि अवश्य करे। मोक्ष भये पीछे चार-पांच

मिनिट ठहर के स्नानादिक करने शुद्ध होय। नवीन जल पात्र तथा स्थल खासा करि नवीन जल सूं झारी भरनी। श्री कूं स्नान कराय के ग्रहण पीछे को भोग तथा शयन भोग धरनो। आरती करनी, अनोसर करने यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनपूर्वक प्रसाद लेनो। यद्यपि या ग्रहण को स्पर्श दिन में है तथापि मोक्ष सूर्यास्त पीछे दृष्टिगोचर होयगो। ता सूं यह ग्रहण माननो चाहिए।

यह ग्रहण : मिथुन, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ राशि वारेन कूं शुभ
सिंह, तुला, धनु, मीन राशि वारेन कूं मध्यम
मेष, वृषभ, कन्या, मकर राशि वारेन कूं अशुभ

जाको जन्म नक्षत्र भरणी होय ताकूं विशेष अनिष्ट जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय तिनकूं विशेष दानादि करने। एक कांस्य के पात्र तातो पतरो धृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा चन्द्र बिम्ब धरिके वा ताते पतरे धृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो ताको मंत्र –

तमोमय महाभीमः सोम सूर्य विमर्दनम्
हेमतार प्रदानेन मम शान्ति प्रदोभव।।१।।

विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत
दाने नानेन नागस्य रक्षमां वेध जाद्भयात्।।२।।

	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
स्टे. घंटा	२	४	६	३
मिनिट	३६	३०	२०	४१

गणितकर्त्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दनजी शास्त्री, मो. 9414473016

श्री सुबोधिनी आदि से संग्रहीत उपदेश

१. जैसी भावना करता है, वैसा ही बन जाता है। अतः सर्वोत्तम बनने के लिये सर्वोत्तम भगवान् की ही भावना करनी चाहिये।

२. जो भगवान् को सर्वत्र मानता है, वह उसे पूर्ण मानता है और वही ''तं यया यथोपासते'' के अनुसार पूर्ण फल प्राप्त करता है तथा विश्वविजयी एवं सर्वत्र भगवान् को मानने वाले प्रल्हाद की भांति सर्वत्र सुरक्षित रहता है और उसकी आत्मा महान् (व्यापक) बन जाती है जिससे उसमें सर्वज्ञता आ जाती है।

३. मौन एवं अन्तःकरण की शुद्धि के लिये होने वाला अनशन ही ''तपो नानशनत्परम्'' के अनुसार सबसे बड़ा तप है।

४. माया से चित्त के सदोष होने पर सर्वत्र ब्रह्म की स्फूर्ति नहीं होती और जब चित्त ब्रह्म से सम्बन्ध कर लेता है तो सर्वत्र ब्रह्म की ही स्फूर्ति होने लगती है।

५. निरन्तर चलने वाले रोगों से पूर्वकृत बुरे कर्मों का अनुमान लगा लेना चाहिये। जैसे कोई स्थायी रूप में दिल की बीमारी वाला हो तो यह अनुमान लगा लेना चाहिये कि उसने निरपराध प्राणियों का हृदय से निरन्तर बुरा चाहा है आदि आदि।

६. अपने भीतर रहे काम क्रोधादि ही दूसरे के काम, क्रोध आदि की उत्पत्ति में कारण बनते हैं, अतः स्वयं को काम, क्रोध आदि से रहित बनाना चाहिये।

७. भगवत्प्रीति रूप उत्तम औषध का मुख्य फल तब होता है जब काम, क्रोध आदि कुपथ्यों से बचा जायेगा।

८. भगवद्भक्ति अग्निवत् है और दुःसंग जल के समान है। यदि भगवद्भक्ति रूप अग्नि पर दुःसंग रूप जल पड़ गया तो भगवद् रूप

अग्नि बुझ जायेगी, अतः उसके नहीं बुझने के लिये कडेया आदि की भांति बीच में सत्संग रखना बहुत आवश्यक है।

६. ब्रह्मसम्बन्ध तथा सेवा से सभी दोषों की निवृत्ति होती है और जब से जीव भगवान् से अलग हुआ है तब से पीछे लगी हुई जो दुःख परम्परा है, उसका नाश होता है तथा उस पर भगवान् का प्रतिक्षण नवीन नवीन अनुग्रह होता रहता है।

१०. अहन्ता ममता से पतन होता है परन्तु इन दोनों का विनियोग यदि "मैं भगवद्दास हूँ मेरे एकमात्र अवलम्बन भगवान् है" इस प्रकार भगवत्सम्बन्ध में हो जाता है तो ये अहन्ता ममता भी सर्वोत्तम फल देने वाली हो जाती है।

११. दीनता से ही पुरुषोत्तम का प्राकट्य होता है।

१२. अनेक दुःखों के आने पर भी भगवान् का आश्रय न छोड़ें क्योंकि भगवान् अपने भक्तों का ऐहिक एवं पारलौकिक सभी कार्य स्वयं करते हैं।

१३. भगवद्बहिर्मुख के संग से दैहिक एवं मानसिक दोष पैदा होते हैं, अतः भगवद्बहिर्मुख का संग कदापि नहीं करना चाहिये।

१४. भगवत्सेवा एवं भगवान् के गुणगान से चित्त का निरोध भगवान् में होता है।

१५. साधु पुरुष अपना बुरा करने वालों का भी हित ही करते हैं।

१६. दैव और आसुर भेद से इन्द्रियां दो प्रकार की होती है जो निषिद्ध कर्म में ही लगी रहती है वे आसुर इन्द्रियां हैं और जो सत्कर्म में लगी रहती है वे दैव इन्द्रियां हैं। आसुर इन्द्रियों से मानव का पतन होता है और दैव इन्द्रियों से अभ्युत्थान होता है।

१७. जैसे उत्कृष्ट भाव से व्रजभक्त सेवा करते थे, उसी प्रकार से सेवा करनी चाहिये।

१८. शरणागत के सभी अपराध निवृत्त हो जाते हैं।

१९. सर्व पुरुषार्थ रूप भगवान् की प्रदक्षिणा करने से सभी पुरुषार्थ अपने अधीन कर लिये जाते हैं।

२०. जिसके हृदय में भगवान् का प्रवेश हो जाता है, उसे अवान्तर एवं मुख्य फल स्वतः प्राप्त हो जाते हैं।

२१. काल कर्म एवं स्वभाव के चक्कर में वही पड़ते हैं, जिन पर भगवान् का अनुग्रह नहीं होता।

२२. सत्ययुग में किये हुए पुण्यों का फल एक वर्ष के बाद मिलता था और पापों का फल तुरन्त ही मिल जाता था। कलियुग में तो इससे विपरीत है अर्थात् इसमें किये हुए पुण्यों का फल तुरन्त मिलता है और पापों का फल एक वर्ष के बाद मिलता है।

२३. कलियुग कलह रूप है, इसमें सभी बात विवादास्पद है।

२४. निश्छद्म हृदय से आत्मा सहित सब कुछ भगवान् के समर्पण करना आत्मनिवेदन है जो भगवान् को आत्मनिवेदन करता है उसके "ये यथा मां प्रपद्यन्ते" के अनुसार भगवान् भी आत्मनिवेदन करते हैं, जैसे बलि के आत्मनिवेदन करने पर भगवान् ने भी अपने आपको द्वारपाल के रूप में समर्पित कर आत्मनिवेदन किया।

इतिशम्

लेखक

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष विद्या विभाग

मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा (राज.)-३१३३०१

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
माघ शु.१३	चि.हरिरायजी के लालजी २
फा.शु.३	चि.श्री वदान्य राय जी चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी

कांकरोली

पौ.शु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	श्री व्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु.५	चि.पुरूषोत्तमजी
का.व.४	चि. द्वारकेशजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी
	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	श्री पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. आश्रयकुमार जी के लालजी १
का.कृ.४	चि. यदुराजजी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. अवतंस बावा
माघ व.४	चि. प्रियम बावा
पौ.सु.६	गो. संजीव कुमार जी गो. संजीव कुमार जी के लालजी १
मार्ग.कृ.४	चि. विट्ठलनाथजी

जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्थ बावा

कोटा-कड़ी

भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
आसो.व.३	गो. विनयकुमारजी
आषा.व.४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी १
चै.शु.१४	चि. पुलकित बाबा
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी
	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
मा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी

कामवन

फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी

चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.व.३	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
चै.सु.१५	गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
	गो. रघुनाथजी के लालजी १
माघ सु.४	चि. योगेशकुमारजी चि. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. लालजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी गो. चि. उपेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.५	चि. वल्लभलालजी
का.कृ.५	चि. घनश्यामलालजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.११	गो. कन्हैयालाल जी गो. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदकुमारजी
फा.सु.१५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	गो. पुरुषोत्तमलालजी
का.शु.४	गो. गोपेशरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
का.सु.६	गो. अक्षयकुमारजी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. ब्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २

भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो.सु.१	चि. प्रणयकुमारजी
	प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	चि. परितोषकुमारजी

मार्ग.व.८	चि. पंकजकुमारजी
वाराणसी	
मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा, गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी २
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा
माघ.कृ.१०	श्री श्रृंगार बाबा
अहमदाबाद	
का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २

ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा
आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा
मुम्बई	
आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
का.व.१३	गो. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	गो. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	चि. रघुनाथजी
	चि. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी

माघ व.६	गो. यदुनाथजी
फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी
मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २

आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी
वै.सु.७	रविरायजी
वै.व.४	गो. योगेशकुमारजी
	गो. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	गो. कमलेशकुमारजी गो. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
पौ.व.५	चि. वल्लभदीक्षितजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी चि. अनिरूद्धलालजी के लालजी १
भा.सु.७	चि. स्वानन्द बावा
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी चि. लाडिलेशजी के लालजी १
चै.कृ.१३	चि. अविचलरायजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
	गो. व्रजनाथलालजी के लालजी १
श्रा.सु.७	चि. ध्येयरायजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २

फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
का.व.४	गो. व्रजेन्द्रजी
	गो. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सारंगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी
	हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी
	चि. जयगोपालजी के लालजी १
आश्वि.कृ.१	चि.भावनेशरायजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
पौ.कृ.८	श्री श्याम मनोहर जी
	गो.रसिकरायजी के लालजी २

वै.व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा.सु.७	चि. मिलनकुमारजी
	चि. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

"श्रावण"

व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.९	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

"भाद्रपद"

सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.९	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा
व.४	श्री चन्द्रगोपालरायजी	बडौदरा सूरत

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा

''आश्विन''

सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद

व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	श्री. जयदेवलाल जी	वीरगाम
व.१४	श्री प्रियव्रतरायजी	मुम्बई

''कार्त्तिक''

सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई

सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन
सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम

''मार्गशीर्ष''

सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विट्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर

'पौष''

सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा

सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलनाथजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.६	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.६	श्री विट्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद

''माघ''

सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई
व.५	श्री कल्याणरायजी	सूरत

''फाल्गुन''

सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.१३	श्री गोकुलनाथजी	माण्डवी-कच्छ
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई

''चैत्र''

सु.१०	श्री गोपाललालजी	कोटा-कड़ी
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली

''वैशाख''

सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री किशोरचन्द्रजी	जूनागढ़
सु.८	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्रीद्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

''ज्येष्ठ''

सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.९	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली

''आषाढ़''

सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

।। श्री गोवर्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयेते ।।

श्री गोवर्धनधर काल के भी काल हैं स्वयं कालरूप हैं **"कालात्मा कालकालश्च कालच्छेदकृदुत्तमः"** *(पुरुषोत्तमनामसहस्त्रम्),* *हम सब एवं यह समस्त चराचर जगत उसी काल की ही मर्यादा के अन्तर्गत है,परन्तु वर्तमान काल मानव मात्र के लिए अनुकूल नहीं है, काल क्रमानुसार कोरोना के परिवर्तित रूपों से समस्त जन का मन विचलित है भले ही अभी लॉकडाउन नहीं है परन्तु मन अवश्य डाउन है । अतः इस मन को मनमोहन श्रीजी के सकारात्मक विचारों से आनन्दित रखें क्योंकि -* **"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"** *(ब्रह्मबिन्दूपनिषत्) मन ही बन्ध और मोक्ष का कारण है, यदि आपका मन स्वस्थ है तो तन स्वस्थ और तन स्वस्थ है तो जीवन भी आनन्दमय है । परन्तु मन चञ्चल है* **"चञ्चलं हि मनः कृष्ण"** *(भगवद्गीता) इस चञ्चल मन को आनन्दित और स्वस्थ करने का एक मात्र उपाय है* **"कृष्ण एव गतिर्मम"** *श्रीकृष्ण की शरणागति द्वारा ही चञ्चल मन पर विजय होगी क्योंकि श्रीकृष्ण ही मन हैं* **"इन्द्रियाणां मनश्चास्मि"** *(भगवद्गीता) ।*

'मन स्वस्थ तो तन स्वस्थ' *अपने मन के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, मन को प्रतिदिन श्रीजी सेवा की औषधि प्रदान करें ।*

"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" *मेरा मन कल्याणमय संकल्पों वाला हो (यजुर्वेदः) ।*

मेरो मन गिरिधर छबि पै अटक्यो ।

गणितकर्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, नक्कारखाना चौक, खर्च भण्डार के पीछे, नाथद्वारा - 313301 (राजस्थान)

India offset Printers, Ajmer # 931439330